* पवलॉव का क्लासिकी अनुबन्धन सिद्धान्त :-

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन सन् 1904 ई० रूसी शास्त्री पवलॉव ने किया उसने अपने सिद्धान्त का आधार अनुबन्धन को माना है।

अनुबन्धन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा उद्दीपन तथा अनुक्रिया के बीच एक साहचर्य स्थापित हो जाता है। इस सिद्धान्त के लिए पवलॉव को नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पवलॉव के इस सीखने के अनुबन्धन सिद्धान्त को कई नामों से जाना जाता है।

(i) पवलॉव का अनुकूलित अनुबन्धन सिद्धान्त।
(ii) शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धान्त
(iii) सम्बन्ध प्रत्यावर्तन या सहज क्रिया द्वारा सीखना।
(iv) पवलॉव का क्लासिकी अनुबन्धन सिद्धान्त।

* इस सिद्धान्त के अनुसार पवलॉव का कहना है कि कोई प्राणी जब किसी उद्दीपन के सम्पर्क में होता है अथवा उससे प्रेरित होता है तो उससे शरीर से सम्बन्धित अंग स्वभाविक रूप से अनुकूल क्रिया करने लगता है।

* पवलॉव का अध्ययन में यह पाया गया है कि स्वभाविक उद्दीपन के लिए स्वभाविक प्रक्रिया करता है। जैसे — गर्म बर्तन के छूते ही हाथ खींच लेना। तथा भूखा होने पर भोजन देखकर लार टपकना इस उदाहरण से गर्म बर्तन तथा भोजन स्वभाविक उद्दीपन है।

* पवलॉव का क्लासिकी अनुबन्धन के सिद्धान्त को प्रभावित करने वाले कारक।

प्रयोगो के आधार पर मनोवैज्ञानिक ने सिद्ध किया कि निम्नलिखित कारक क्लासिकी अनुबन्धन सिद्धान्त को प्रभावित करते है।

① अभ्यास
② बाहरी रुकावटे
③ अभिप्रेरणा
④ बुद्धि
⑤ अवस्था एवं आयु
⑥ स्वास्थ्य
⑦ वातावरण

* पवलॉव सिद्धान्त के गुण या विशेषताएँ।

⇒ यह सिद्धान्त सीखने की स्वभाविक विधी (व्यस्त) बताती है अतः यह बालको को शिक्षा देने में सहायक होती है।

⇒ यह सिद्धान्त बालको के समाजीकरण और वातावरण से उनका समानजस्य स्थापित करने में सहायता देती है।

⇒ इस सिद्धान्त का प्रयोग करके बालकों मे भय संबंधी रोगो का उपचार किया जा सकता है।

⇒ इस सिद्धान्त की सहायता से बालको में अच्छे व्यवहार और उत्तम अनुशासन की भावना का विकास किया जा सकता है।

⇒ यह सिद्धान्त उन विषयों की शिक्षा के लिए बहुत उपयोगी है जिसमे चिंतन की आवश्यकता नही होती है।

*** पवलॉव का क्लासिकी अनुबन्धन सिद्धान्त का शैक्षिक आशय या निहितार्थ।**

इस सिद्धान्त के कुछ प्रयोगो को छोड़कर शेष सभी प्रयोगो ~~शिक्षा~~ पशु-पक्षियों पर हुए थे। इसलिए ये प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र में अधिक उपयोगी नहीं हो सका। परन्तु इन प्रयोगो से प्राप्त परिणामों के आधार पर कुछ प्रमुख शैक्षिक निहितार्थ निम्न है।

⇒ विद्यालय या कक्षा में जब अध्यापक बालको से सहानुभूति पूर्ण स्नेहपूर्ण व्यवहार करते है। बालक उसी व्यवहार से प्रभावित होकर बार-बार उस व्यवहार को पाने के लिए कक्षा में उपस्थित रह कर अध्यापक पर ध्यान देते है।

⇒ जब कक्षा में अचानक बालको पर दबाव बनाते है या दण्ड देते है तब विद्यार्थी उनकी कक्षाओं से भागना चाहते है।

⇒ इस सिद्धान्तों के आधार पर जब बालक जिन व्यक्तियों या वस्तुओं से घृणा करता है। उससे मिलते-जुलते अन्य व्यक्तियों और वस्तुओं से नफरत करता है।

⇒ इस सिद्धान्त के अनुसार बालक बहुत सी असमान्य व्यवहार को अधिगम के रूप में जान जाता है।

* पवलॉव की अधिगम की सिद्धान्त की सीमाएँ / आलोचना या दोष।

कई मनोवैज्ञानिक ने पवलॉव के अधिगम सिद्धान्त की निम्नलिखित कमीया को दिया है।

⇒ यह सिद्धान्त सीखने के सिद्धांत किसी एक विशिष्ठ स्थिति का व्याख्या करता है मनुष्य की सीखने की प्रक्रिया इतनी व्यापक होती है कि उसे केवल अनुकूलन द्वारा स्वाभाविक क्रियाएँ करने के आधार पर नहीं समझा जा सकता है।

⇒ इस सिद्धान्त के द्वारा क्रिया का अध्ययन एक कुत्ते क्रिया के आधार पर किया गया है जो मनुष्य की अधिगम क्रिया को समझने के लिए प्रर्याप्त नहीं है।

⇒ यह सिद्धान्त सीखने की विधि को केवल यांत्रिक रूप में देखता है तथा मनुष्य की तर्क, चिंतन, निरीक्षण, ध्यान, स्मरण, कल्पना तथा अनुकरण आदि मानसिक एवं बौद्धिक शक्तियों की व्याख्या नहीं करता है।

⇒ इस तरह से प्राप्त किया गया अधिगम दृढ़ायी नहीं होगा। भ्रम के टुट जाने पर प्राप्त किया गया अधिगम खत्म हो सकता है। जैसे — कुत्ते को जब यह पता चल जायेगा कि केवल घंटी बजती है भोजन नही आता तो उसकी स्वभाविक क्रिया समाप्त हो जायेगी।